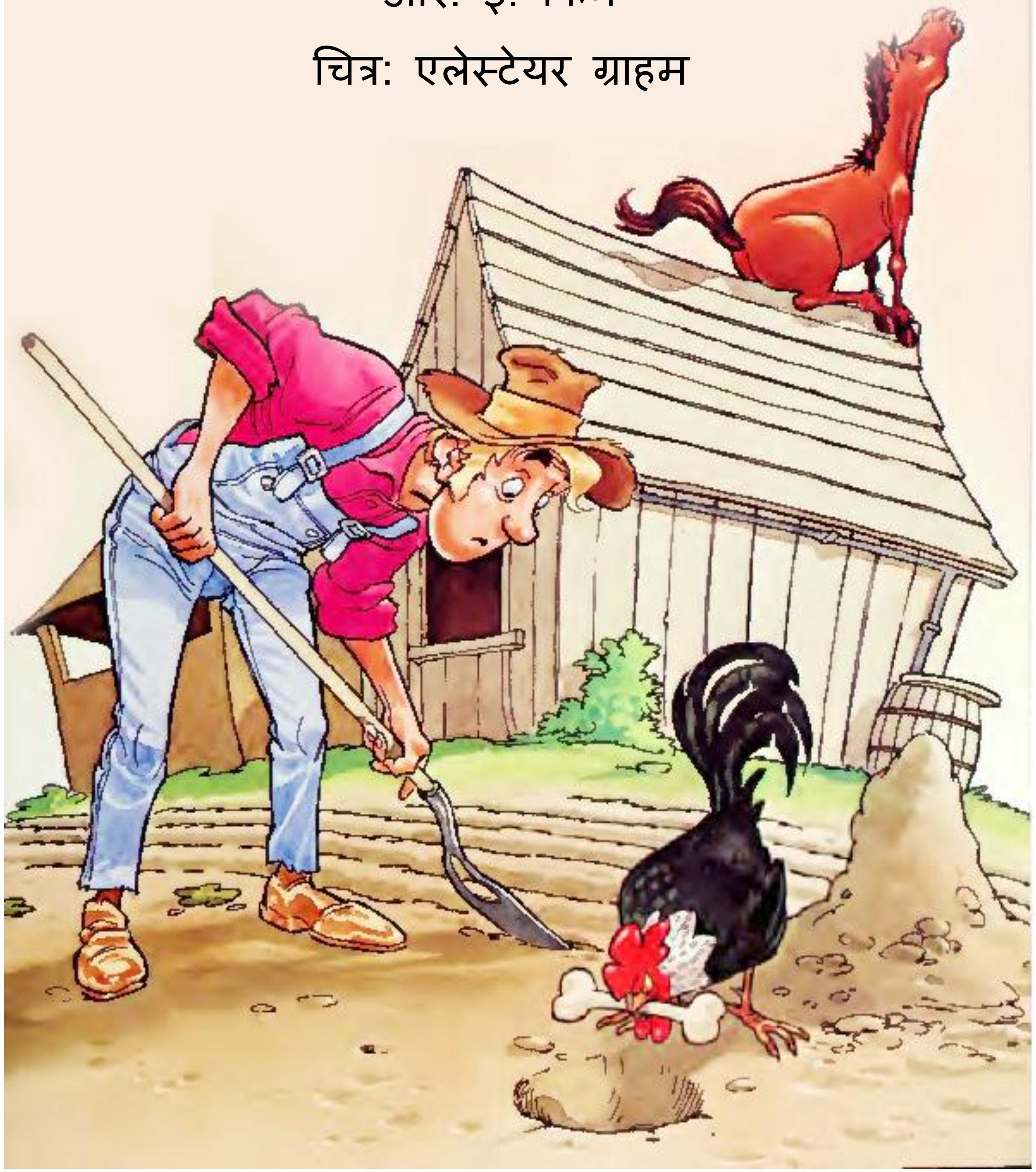
विचित्र फार्म

आर. ई. किंग

चित्र: एलेस्टेयर ग्राहम

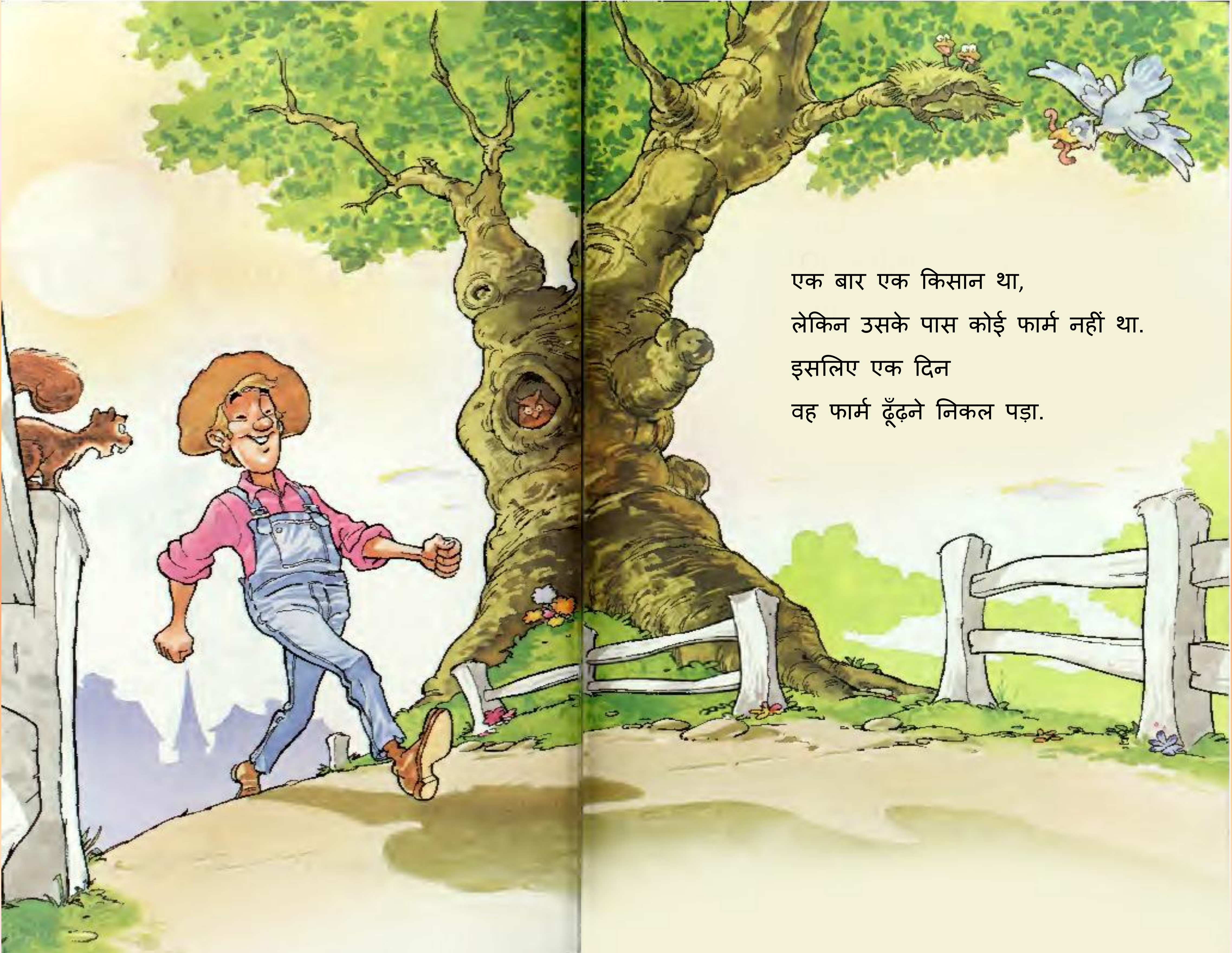


विचित्र फार्म

आर. ई. किंग

चित्र: एलेस्टेयर ग्राहम





एक बार एक किसान था,
लेकिन उसके पास कोई फार्म नहीं था.
इसलिए एक दिन
वह फार्म ढूँढ़ने निकल पड़ा.

जल्द ही किसान

एक बूढ़े आदमी से मिला.

बूढ़ा आदमी कड़ी मेहनत कर रहा था.

"नमस्ते," किसान ने कहा.

"यह आप क्या कर रहे हैं?"



"मैं घास उलीच रहा हूँ," बूढ़े आदमी ने कहा.

"लेकिन आपका औज़ार (पंजा) कहाँ है?"

किसान ने पूछा.

बूढ़े आदमी ने एक टेबल फोर्क (कांटा) उठाया.



"क्या उस छोटे से कांटे से

घास उलीचना मुश्किल नहीं होगा?"

किसान ने पूछा

"हाँ," बूढ़े आदमी ने कहा.

"यह बहुत मुश्किल काम है.

मैं बूढ़ा और थका हुआ हूँ.

मैं अब अपने फार्म पर काम नहीं करना चाहता.

क्या तुम किसी ऐसे इंसान को जानते हैं

जो मेरा फार्म खरीदना चाहेगा?"

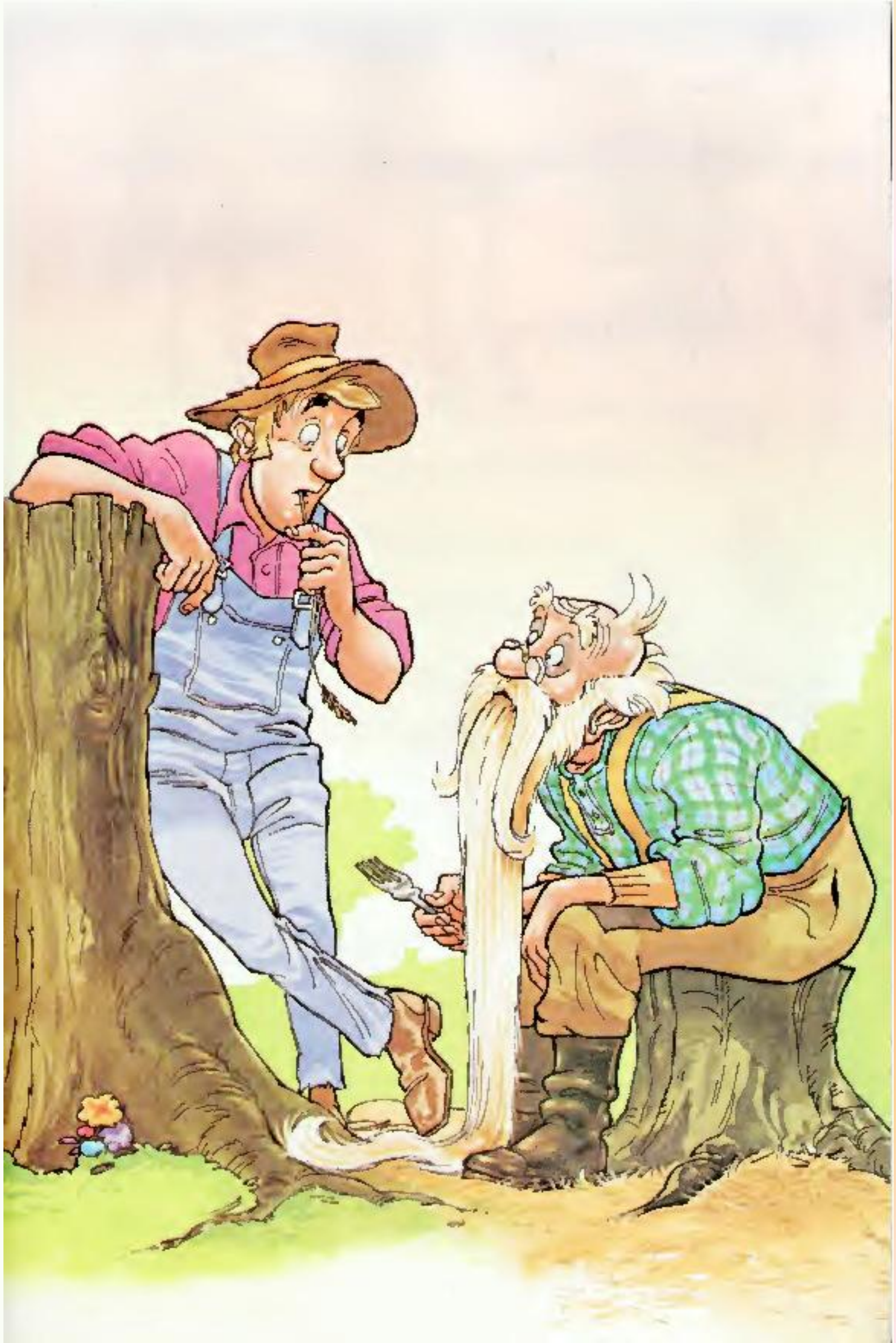
बूढ़े आदमी ने पूछा.

"ज़रूर!" किसान चिल्लाया.

"मैं एक फार्म ही तो

खरीदने निकला था.

आपके फार्म की क्या कीमत है?"





"दो डॉलर," बूढ़े आदमी ने पूछा.

"दो डॉलर!

वो बहुत ज़्यादा है?"

किसान ने कहा.



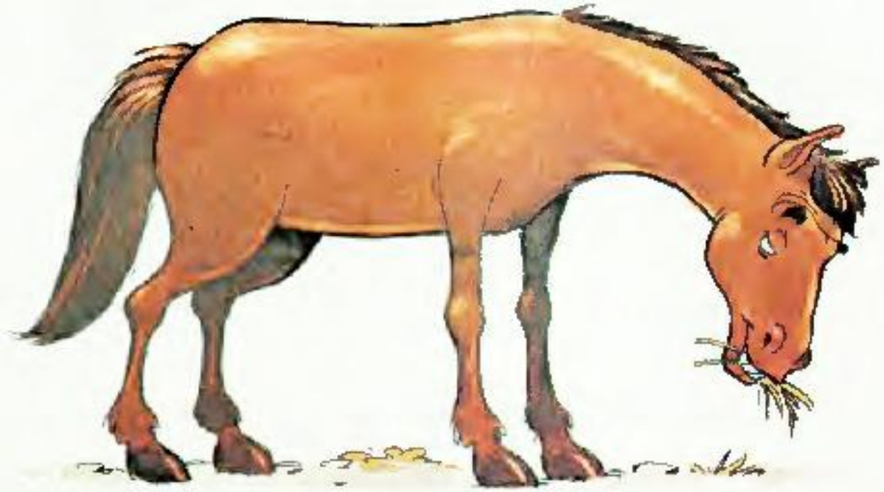


"अच्छा, अगर दो डॉलर

बहुत ज़्यादा हैं, तो

एक डॉलर कैसा रहेगा?"

बूढ़े आदमी ने पूछा.







"देखो, मेरे फार्म में

एक घोड़ा,

एक मुर्गा,

एक कुत्ता,

एक मुर्गी,

एक सुअर,

और एक बिल्ली है."







"सौदा पक्का!"

किसान चिल्लाया.

उसने बूढ़े आदमी को

एक डॉलर दिया.

किसान बहुत खुश हुआ.

"कितना सौभाग्य है कि

मैं आप से मिला!" उसने कहा.

बूढ़ा आदमी भी खुश था.

उसने अपना कांटा फेंक दिया

और सड़क पर नाचने लगा.

फिर किसान अपना नया फार्म देखने गया.



एक गाड़ी खलिहान के दरवाज़े पर खड़ी थी.

"यही गाड़ी तो मुझे घास ढोने के लिए चाहिए,"

किसान ने कहा.

तभी उसने एक धीमी आवाज़ सुनी—

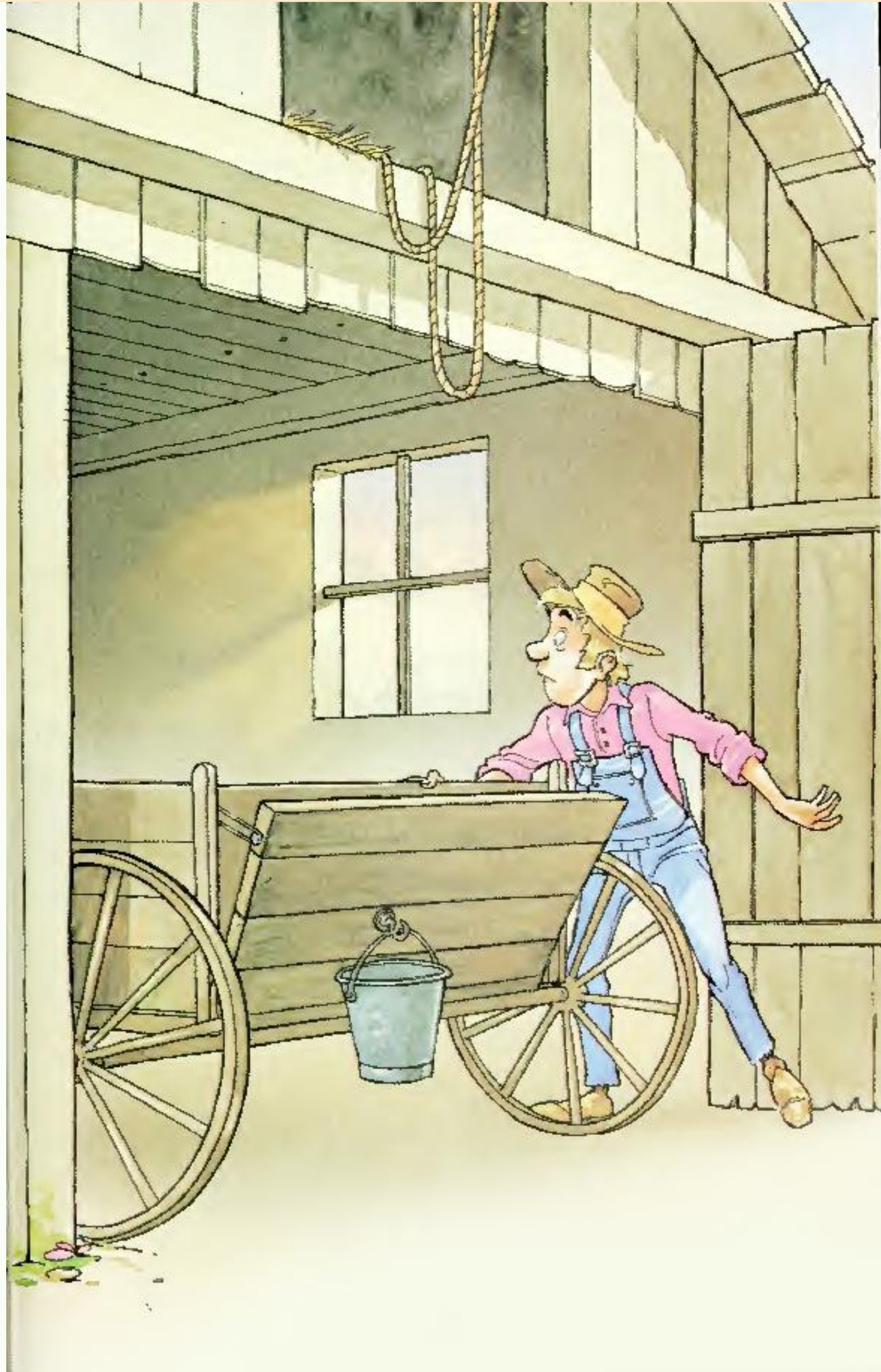
"हिं, हिं."

"यह घोड़ा ही होगा,"

किसान ने कहा.

"मैं इसे गाड़ी से बाँध दूँगा."

वह खलिहान में गया.



उसे घोड़ा कहीं नहीं दिखा.

लेकिन उसे एक बिल्ली ज़रूर दिखाई दी.

वह गाड़ी से जुड़ी हुई थी!

बिल्ली गाड़ी खींचती रही.

लेकिन गाड़ी हिली तक नहीं.

"हिं, हिं, हिं!"

बिल्ली ने कहा.

किसान हँसा.

"तुम घोड़ा नहीं हो!

तुम एक बिल्ली हो!

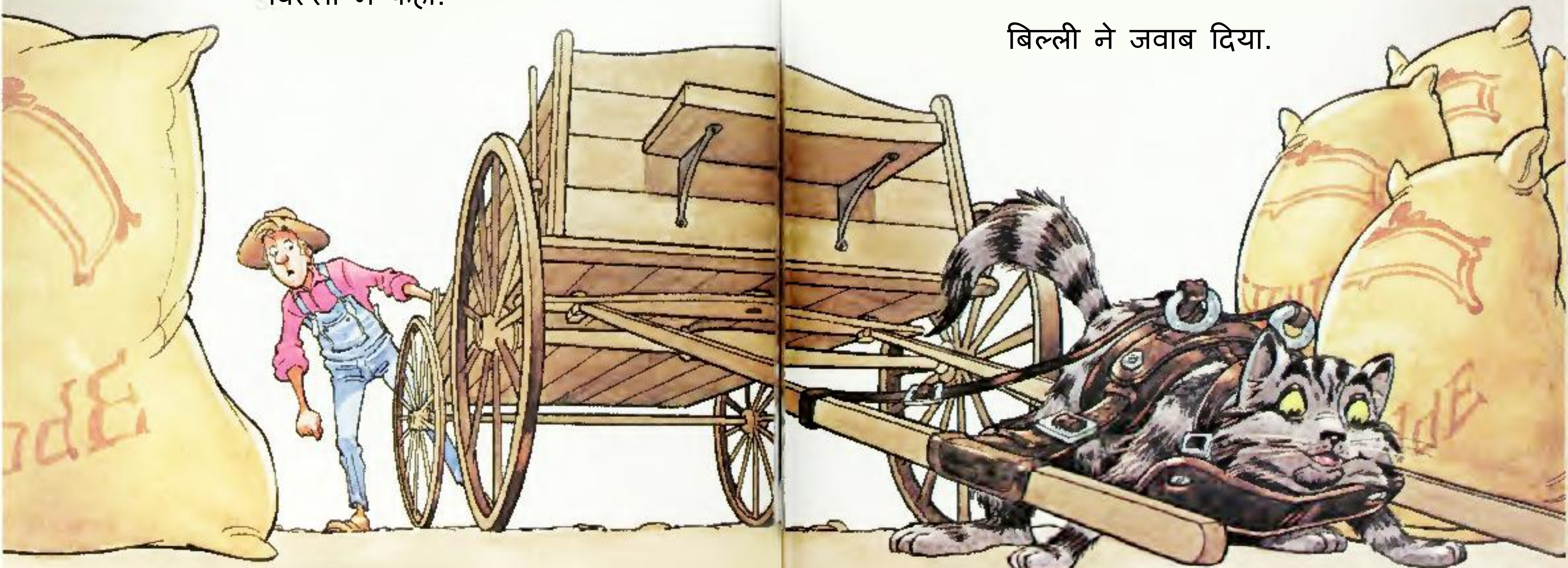
तुम गाड़ी से बंधकर

क्या कर रही हो?"

किसान ने पूछा

"हिं, हिं, हिं!"

बिल्ली ने जवाब दिया.



किसान घोड़े को ढूँढ़ने के लिए बाहर गया.

फिर उसने एक और आवाज़ सुनी.

"कॉक-ए-डूडल-डू!"

किसान ने ऊपर देखा.

और उसने क्या देखा?

एक घोड़ा!

घोड़ा खलिहान की छत पर था!

"कॉक-ए-डूडल-डू!"

घोड़े ने बाँग दी.



"तुम वहाँ ऊपर क्या कर रहे हो?"

किसान चिल्लाया.

"तुम मुर्गा नहीं हो!

तुम एक घोड़ा हो!"



"इस फार्म बड़ा विचित्र है,

किसान ने कहा.

फिर वह मुर्गे को ढूँढ़ने निकल पड़ा.

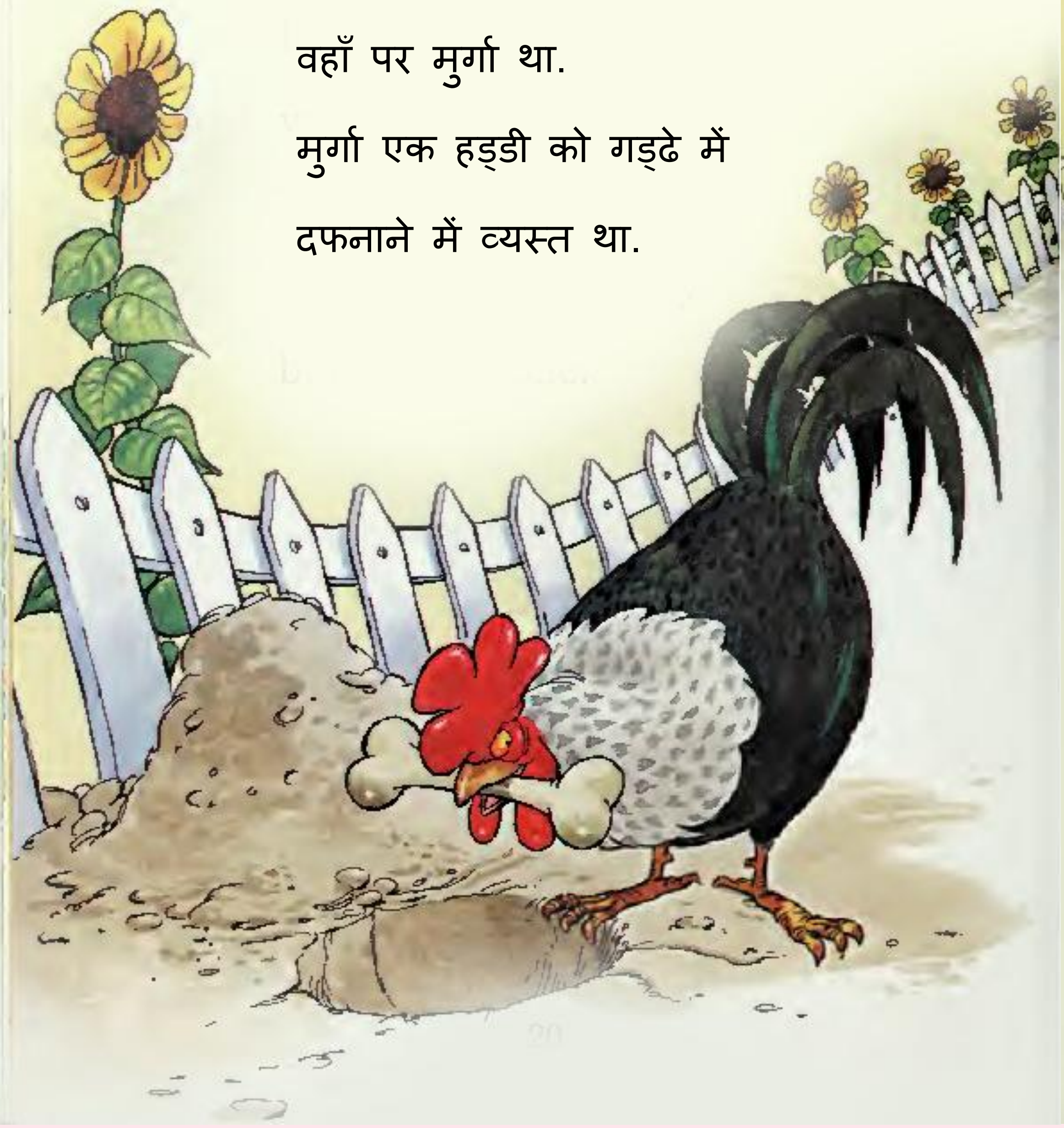
खलिहान के पीछे

एक बगीचा था.

वहाँ पर मुर्गा था.

मुर्गा एक हड्डी को गड्ढे में

दफनाने में व्यस्त था.





"वुफ़, वुफ़, वुफ़!"

मुर्गा भौंका.

"नहीं, नहीं, नहीं!" किसान ने कहा.

"तुम कुत्ते नहीं हो!

तुम एक मुर्गा हो!"



फिर किसान कुत्ते को ढूँढ़ने लगा.

उसे कुत्ता, मुर्गीघर में मिला.

कुत्ता अंडों के एक घोंसले पर बैठा था.

"कुकड़ू-कूं, कुकड़ू-कूं, कुकड़ू-कूं!"

कुत्ते ने कहा.

"नहीं, नहीं, नहीं!" किसान चिल्लाया.

"तुम मुर्गी नहीं हो!

तुम एक कुत्ते हो!

अब, भला मुर्गी कहाँ हो सकती है?"



उसे दूर देखने की ज़रूरत नहीं पड़ी.

मुर्गी, सुअर के बाड़े में थी.

वो कीचड़ में लोट रही थी!





"ओइंक, ओइंक, ओइंक!"

कीचड़ से सनी मुर्गी चीखी.

"तुम बेवकूफ़ क्यों कुड़कुड़ा रही हो!

तुम सुअर नहीं हो!

तुम एक मुर्गी हो!"

किसान ने कहा.

किसान ने सुअर को ढूँढ़ा

और ढूँढ़ा.

और आखिरकार उसे सुअर मिला—

फार्महाउस में!

सुअर रसोई में

एक चूहे का पीछा कर रहा था.

"म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ!"

सुअर ने कहा.

"यह सब ग़लत है!"

किसान चिल्लाया.

"सूअर चूहों का पीछा नहीं करते.

वो बिल्लियाँ करती हैं.

तुम बिल्ली नहीं हो!

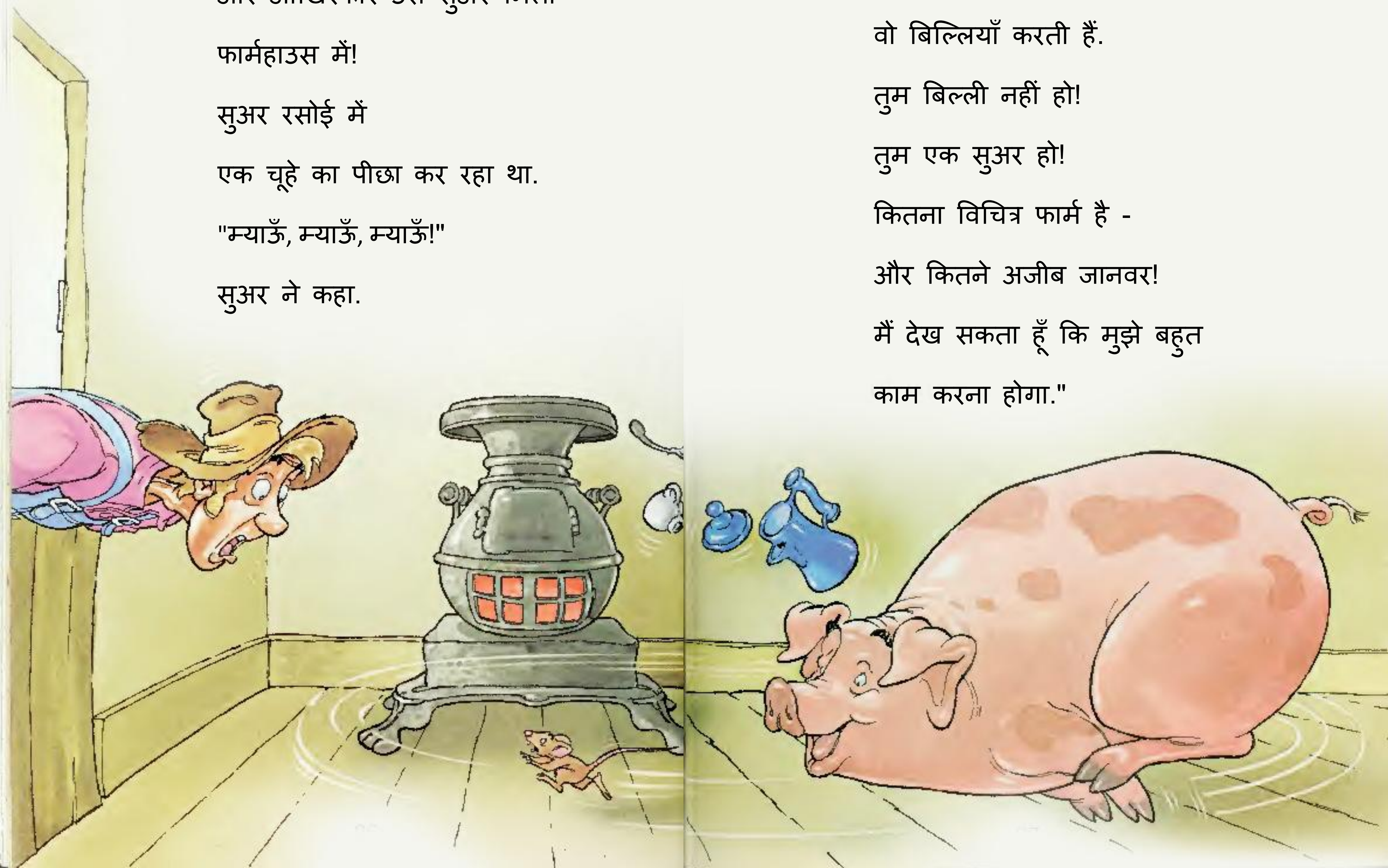
तुम एक सुअर हो!

कितना विचित्र फार्म है -

और कितने अजीब जानवर!

मैं देख सकता हूँ कि मुझे बहुत

काम करना होगा."



सबसे पहले किसान

घोड़े को गाड़ी तक ले गया.

उसने घोड़े को दिखाया

कि घोड़ा कैसे बना जाता है.

"हिंहिं, हिंहिं, हिंहिं!"

किसान ने कहा

"हिंहिं, हिंहिं, हिंहिं!"

घोड़े ने कहा.

"बहुत अच्छा!" किसान ने कहा.





इसके बाद किसान मुर्गे को
खलिहान की छत पर ले गया.
उसने मुर्गे को दिखाया
कि वो मुर्गा कैसे बने.
किसान ने अपना सिर पीछे किया.

"कॉक-ए-डूडल-डू!"
किसान ने बाँग दी.
"कॉक-ए-डूडल-डू!"
मुर्गे ने बाँग दी
"बिल्कुल सही!" किसान ने कहा







फिर किसान कुत्ते को बगीचे में ले गया.

उसने कुत्ते को दिखाया

कि वो कुत्ता कैसे बनें.

किसान ने एक बड़ा गड्ढा खोदा.

फिर उसने गड्ढे में एक हड्डी डाली.

"वुफ़, वुफ़, वुफ़!"

किसान भौंका.

"वुफ़, वुफ़, वुफ़!"

कुत्ता भौंका.

"अच्छा कुत्ता!"

किसान ने कहा.



फिर किसान ने

मुर्गी को

मुर्गी बनना सिखाया.



और बिल्ली को

बिल्ली कैसे बनना है.

और सुअर को

सुअर कैसे बनना है

वो सिखाया.



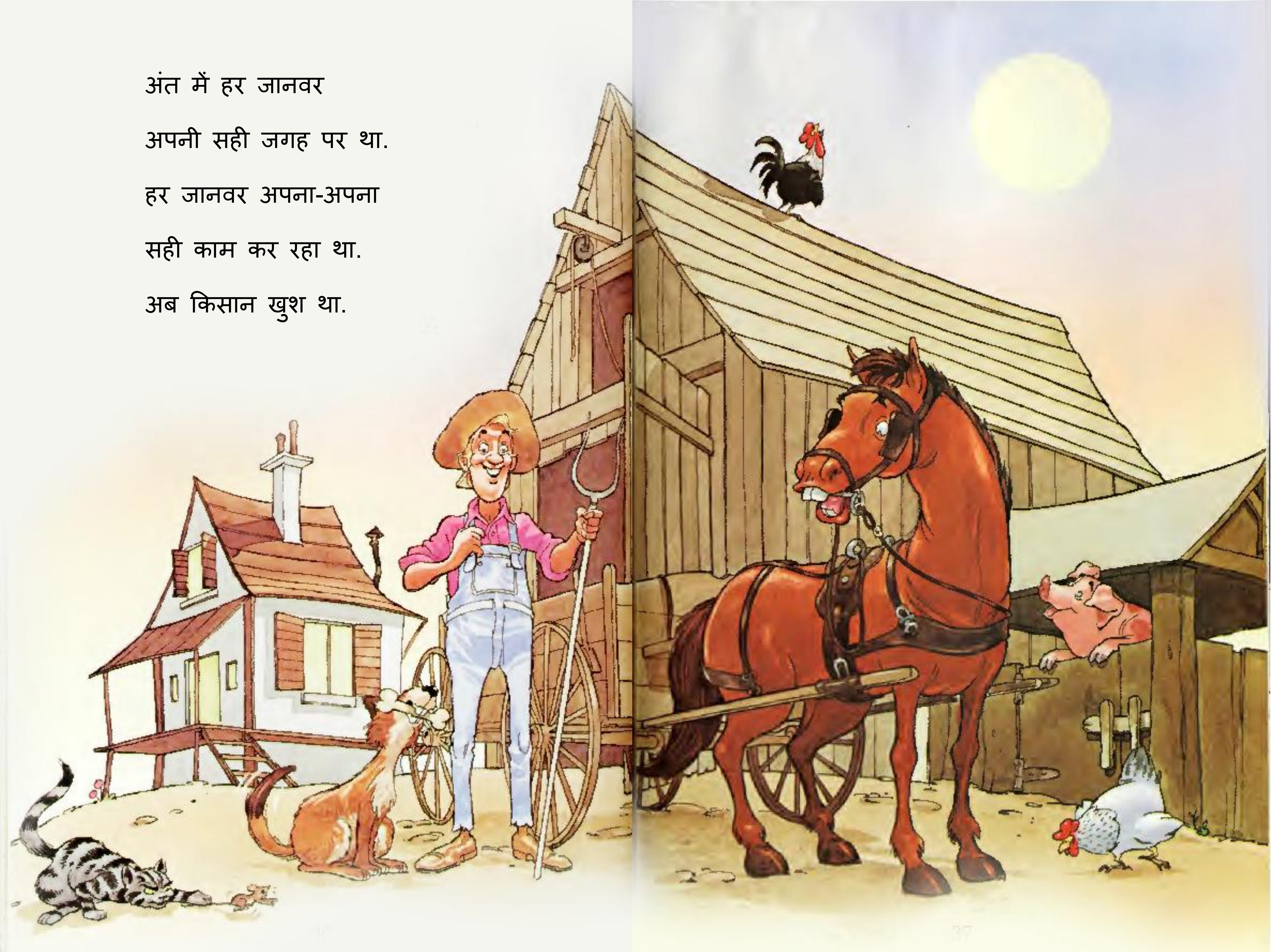
अंत में हर जानवर

अपनी सही जगह पर था.

हर जानवर अपना-अपना

सही काम कर रहा था.

अब किसान खुश था.



अगले दिन किसान

अपने खेतों में काम करने गया.

"मैं भाग्यशाली हूँ," उसने कहा,

"क्योंकि मेरे पास एक फार्म है.

लेकिन मैं अकेला हूँ

क्योंकि मेरी कोई पत्नी नहीं है."

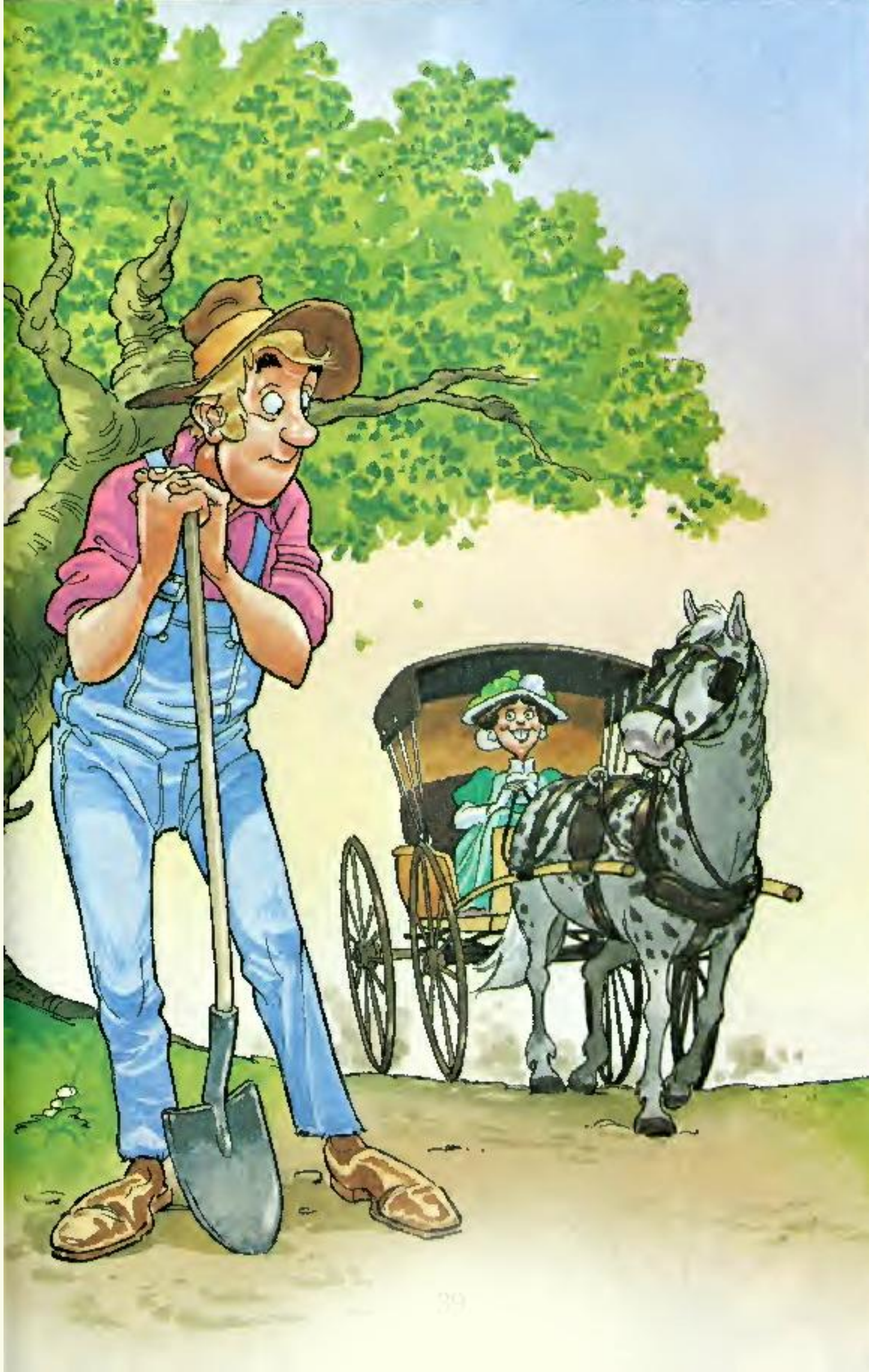
उसी क्षण

एक महिला घोड़े पर सवार होकर आई.

"क्या मैंने तुम्हें यह कहते सुना

कि तुम एक पत्नी चाहते हो?"

महिला ने पूछा.



"मैं एक पति की तलाश में हूँ.

तुम्हारा फार्म बहुत अच्छा लग रहा है.

तुम भी बहुत अच्छे लग रहे हो.

मैं तुमसे शादी करूँगी,"

महिला ने कहा.





इस तरह किसान और महिला की

शादी हो गई.

अगले दिन महिला ने किसान से कहा,

"मेरे पिता हैं.

उनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं है.

क्या वह हमारे साथ

हमारे फार्म पर रह सकते हैं?"

किसान ने उत्तर दिया,

"हाँ, बिल्कुल!"



जैसे ही किसान ने यह कहा,

बूढ़ा आदमी बाहर कूद पड़ा.



जब महिला ने बूढ़े आदमी को देखा,

तो उसने कहा, "पिताजी!"

जब बिल्ली ने बूढ़े आदमी को देखा,

तो वह गाड़ी के पास गई

और बोली, "हिंहिं, हिंहिं, हिंहिं!"





जब घोड़े ने बूढ़े आदमी को देखा,

तो वह खलिहान की छत पर चढ़ गया

और बांग दी, "कॉक-ए-डूडल-डू!"

मुर्गा एक हड्डी लेकर बगीचे में भागा

और भौंका,

"वुफ़, वुफ़, वुफ़!"





कुत्ता अंडों पर बैठ गया

और बोला, "कुकड़ू-कूं, कुकड़ू-कूं, कुकड़ू-कूं!"

मुर्गी कीचड़ में कूदी और चीखी,

"ओइंक, ओइंक, ओइंकल"





और सुअर, चूहे के बिल की ओर भागा

और घुरघुराया, "म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ!"

बूढ़े आदमी ने अपनी बेटी

और नए दामाद को गले लगाया.

"हम साथ में बहुत खुश रहेंगे!"

बूढ़े आदमी ने कहा.

तुम्हें क्या लगता है :

क्या वे हमेशा खुशी-ख़ुशी रहे?



विचित्र फार्म

क्या तुम सिर्फ़ एक डॉलर में

एक फार्म खरीदोगे?

एक युवा किसान यही करता है.

"यह मेरा भाग्यशाली दिन होगा!"

वह चिल्लाता है.

लेकिन क्या यह सच है?

यह एक बहुत ही विचित्र फार्म के बारे में

एक बहुत ही मज़ेदार कहानी है!